... है, लिखित रूप में नहीं।

जब साहित्य मौखिक था तो सुरक्षित कैसे रहा। क्या श्रुति के जरिये। श्रुति का इस्तेमाल इन Religion में नहीं होगा। तो कैसे सुरक्षित चला। **महासभाओं** के जरिये, **महासम्मेलनों** के जरिये। जब-2 किसी बिंदु पर विवाद खड़ा होता था, महासम्मेलन बुलाए जाते थे वहाँ समस्त आचार्य की उपस्थिति में इस पर परिचर्चा होती थी आपको किस बिंदु पर ऐतराज है मतभेद का निराकरण किया जाता था। समाधान ढूंढा जाता था। समाधान मिल जाता था तो माना जाता था कि साहित्य सुरक्षित हो गए लेकिन ऐसा नहीं होता था कि उसे भी लिखित रूप दे दिया जाता था इसलिए सम्मेलनों के जरिये ही साहित्य को सुरक्षित रखने की कोशिश होती थी लिखित रूप देकर नहीं। जैन धर्म से भी जुड़ा दो महासम्मेलन हुआ।

प्रथम महासम्मेलन

299 ई० पू० - मौर्यकाल पाटलिपुत्र, चन्द्रगुप्त मौर्य

अध्यक्षता - स्थूलभद्र

इसमें मतभेदों का निराकरण पूरी तौर पर नहीं हो सका। कुछ लोगों ने सम्मेलन का बहिष्कार किया कुछ लोग सम्मेलन में ही मौजूद रहे। जैन धर्म में **फूट** भी यहीं पड़ गई। **दिगंबर श्वेतांबर** दो अलग-2 खेमे में बंट गए। साहित्य को यहाँ भी लिखित रूप नहीं दिया गया। इसलिए मतभेद जैसा का तैसा रह गया।

Scanned with CamScanner

... नहीं रहता। प्रकृति बदलना है

द्वितीय जैन महासम्मेलन

512 A.D. महावीर के जाने के 900 साल बाद
गुप्त काल वल्लभी (गुजरात)
गुप्त शासक भानुगुप्त के समय में
अध्यक्षता - देवर्धि क्षमा श्रमण

शानदार उपलब्धि रही
इस महासम्मेलन में ही संपूर्ण मूल जैन साहित्य को, महावीर की वाणी को
1) स्थिर कर लिया गया
2) वर्गीकृत कर दिया
3) पुस्तकीय रूप दे दिया गया
4) लिखित रूप दिया गया

इसलिए जैसे वैदिक धर्म के चलते रहे, ठीक वैसे ही जैन धर्म के साहित्य नहीं चला यद्यपि दोनों मौखिक ही थे। वैदिक धर्म के साहित्य गुरुकुल में पढ़ाकर सुरक्षित चलते रहे। श्रुति, शाखा के जरिये लेकिन यहाँ श्रुति और शाखा नहीं थी यहाँ महासम्मेलन हुआ महासभा। इसलिए मौखिक साहित्य सुरक्षित चला महासम्मेलनों, महासभाओं के जरिये लंबे समय बाद इसे लिखित रूप दिया गया। लिखित रूप दिया जाना कोई अतिरिक्त विशेषता नहीं।

मूल जैन साहित्य को क्या कहते हैं?
- आगम साहित्य या पूर्वास

(A) 14 पूर्वास
प्रथम (1) जैन साहित्य है
→ जैन साहित्य में भी मूल जैन साहित्य है
→ प्राकृत साहित्य है
यह 6 century B.C से 5 century के बीच का साहित्य

यह महावीर वाणी है। इसलिए देन किसकी महावीर की। स्वरूप कैसा।

स्वरूप कैसा - विशुद्ध धार्मिक, जैन धर्म का original literature
स्वरूप कैसा - मूलतः मौखिक
इसमें क्या था - महावीर की वाणी थी और महावीर ने 32 साल जो कुछ दिया, वह सब इसी में था। यदि उन्होंने उपदेश दिया वह भी इसी में था। यदि उन्होंने कहानियां बताई, तो भी इसी में। यदि कथन दिया। सिद्धांत दिया, इसी का सम्पूर्णतया महावीर वाणी 14 पूर्वों में थी यह मौखिक साहित्य था।

→ महावीर के जाने के बाद यह कैसे सुरक्षित चला।
यह अधिक समय तक सुरक्षित नहीं चल सका। महावीर के बाद क्रमशः कुछ आचार्य होते हुए जिन्हें 14 पूर्वों की पूरी जानकारी थी।
महावीर के बाद उनके शिष्य इन्द्रभूति गौतम हुए, जिन्हें इनकी पूरी जानकारी थी फिर जंबू स्वामी हुए, इन्हें भी पूरी जानकारी थी
फिर आगे विष्णु स्वामी हुए, पूरी जानकारी
फिर सम्भूति विजय हुए उन्हें भी इनकी पूरी जानकारी थी। इनके बाद भद्रबाहु हुए। ये एक संघ के अंतिम व्यक्ति हैं, जिन्हें 14 पूर्वों की 100% जानकारी थी।

आगे इस संसार में जो भी लोग हुए उन्हें 14 पूर्वास की थोड़ी बहुत जानकारी हुई, पूर्ण जानकारी नहीं इसलिए महावीर की मूल शिक्षा था जिन्हें 14 पूर्वांग कहा गया। - वह महावीर के बाद मात्र 5, 6 पीढ़ी चल सकी। दीर्घ काल आते-आते 14 पूर्वस इस संसार से लुप्त हो गया। भद्रबाहु के बाद कोई इस संसार में नहीं, जिन्हें इसकी पूर्ण जानकारी हो। इसलिए 14 पूर्वांग केवल अब सम्मान की चीज है, पेपर में ही अब उपलब्ध नहीं है। अब जो कुछ संसार में है वह 14 पूर्वांग में बचा हुआ हिस्सा ही है। जो बच गया उसे ही बाद में सुरक्षित रखकर पुस्तकीय रूप देकर लाया गया। लेकिन जो 100% था वह लुप्त हो गया। जो बच गया उसे ही कहते हैं -- अंग, उपांग, प्रकीर्ण, छेद सूत्र और मूल सूत्र।

अंग - 12
उपांग - 12
प्रकीर्ण - 10
छेद सूत्र - 6 मूल सूत्र - 4

यही है Complete उपलब्ध मूल जैन साहित्य।

12 अंग

→ मूल जैन साहित्य
→ यह भी महावीर वचन है
→ यह भी प्राकृत साहित्य है
— रचनाकाल वही है जो महावीर काल है पर 14 पूर्वस के लुप्त होने के बाद विकसित रूप में उभरा।
प्रथम जैन महासभा के दौरान उभरा

— यह है तो महावीर वचन, लेकिन इन व्यवस्थित करने का श्रेय जैन आचार्य स्थूलभद्र को जाता है।
— इस साहित्य को पुस्तकीय रूप दिया गया Second जैन Council में।

→ इसमें है क्या ?
इसमें उपदेश शिक्षा नियम सिद्धांत सब है सबका मिला-जुला रूप है।

इसकी संख्या कितनी है
12, 12 अंग । इसमें भी एक लुप्त हो गया।
केवल 11 उपलब्ध है।

→ क्या समस्त अंग महत्वपूर्ण - No. है
इतिहास की दृष्टि से 12 अंग में से कुछ महत्वपूर्ण है।
1. आचरांग सूत्र — 12 अंग में एक अंग इसमें महावीर के मुख से 12 वर्षीय कठोरतम तपस्या का ब्यौरा है।
वर्धमान → महावीर कैसे बने इसी मे बताया गया
एक प्रकार से आचार शास्त्र भी है
Cood of conduct

2. भगवती सूत्र - 12 अंग में एक सबसे अधिक प्रसिद्ध
एक प्रकार से यह महावीर का जीवन चरित्र है Biography of Mahavir
16 महाजनपदों का उल्लेख इसी में
स्वर्ग क्या है Happiness क्या
Re Birth क्या ? बताया गया

3. उपासक दशांग सूत्र — 12 अंगों में एक इसमें 10 समृद्ध व्यापारी की चर्चा है, महावीर काल को बताया गया कि इन व्यापारियों ने महावीर के बताए नियम पर चलना स्वीकारा और इन्हें चरम लक्ष्य मोक्ष प्राप्त हुआ थी इससे यह जानकारी मिलती है कि जैन धर्म अपने शुरुआती दौर में व्यापारियों के बीच पैठ बना चुकी था आज भी व्यापारियों के बीच यह लोकप्रिय।

4. सूत्रकृतांग — 12 अंग में एक महावीर के सघन प्रचार का ब्यौरा। याने उम्र के 50 वर्ष या 52 वे वर्ष से 72 वर्ष तक घूम-2 प्रचार किया। उन्हें कैसा अनुभव प्राप्त हुआ। इसकी जानकारी सूत्रकृतांग से